

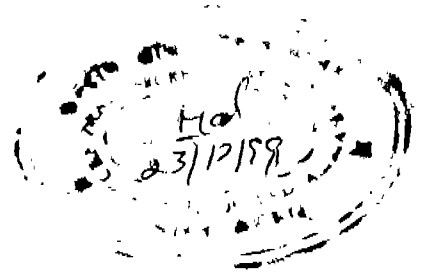


# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड—1  
PART I—Section—1

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY



i. 225 ]

नई दिल्ली, शुक्रवार, अक्टूबर 15, 1999/आश्विन 23, 1921

lo. 225 ]

NEW DELHI, FRIDAY, OCTOBER 15, 1999/ASVINA 23, 1921

वाणिज्य मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 13 अक्टूबर, 1999

विषय : टर्की, हंगरी, यूरोपियन संघ से एकलिक फाईबर के आयातों के संबंध में पाटन रोधी जांच—आरंभिक निष्कर्ष।

34/1/98/डीजीएडी—सीमाशुल्क टैरिफ (संशोधन) अधिनियम, 1995 तथा उसकी सीमाशुल्क टैरिफ (पाटन वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं समाहरण तथा क्षतिनिर्धारण) नियमावली, 1995 का ध्यान करते हुए :—

क. पद्धति

1. जांच के लिए नीचे दी गई पद्धति का पालन किया गया है :—

- (i) नामनिर्दिष्ट प्राधिकारी ने (जिसे इसमें इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है) उपरोक्त नियमावली के अंतर्गत, मैसर्स इण्डियन एक्रेलिक्स लि., चण्डीगढ़ ; मैसर्स पशुपति एकीलोन लि. नई दिल्ली तथा मैसर्स कंसोलिडेटेड फाईबर एंड कैमिकल्स लि. कलकत्ता से टर्की, हंगरी एवं यूरोपीय संघ मूल के या वहां से निर्यातित एक्रेलिक फाईबर के पाटन का आरोप लगाते हुए एक लिखित याचिका प्राप्त की।
- (ii) आवेदन की आरंभिक जांच से कुछ कमियों का पता लगा जिन्हें वादी द्वारा बाद में ठीक कर दिया गया था। अतः याचिका को उचित विलेखित माना गया था।
- (iii) वादी द्वारा दिए गए पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर प्राधिकारी ने टर्की, हंगरी तथा यूरोपीय संघ मूल के या वहां से निर्यातित एक्रेलिक फाईबर के आरोपित पाटन आयातों की जांच करने का निश्चय किया। प्राधिकारी ने जांच आरंभ करने से पहले नियमावली के नियम 5(5) के अंतर्गत, पाटन के आरोप के प्राप्त होने की सूचना विपयगत देशों के दूतावासों को दी ;
- (iv) प्राधिकारी ने सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अनुच्छेद 55 के अंतर्गत वर्गीकृत, टर्की, हंगरी तथा यूरोपीय संघ मूल के या वहां से निर्यातित एक्रेलिक फाईबर के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच आरंभ करते हुए भारत के राजपत्र, असाधारण में एक सार्वजनिक सूचना, तारीख 26 मार्च, 1999 प्रकाशित कर जारी की।
- (v) प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की एक प्रति ज्ञात निर्यातकों (जिनका विवरण वादी द्वारा उपलब्ध कराया गया था) एवं उद्योग संघों को भेजी और उन्हें, पत्र की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचार लिखित रूप में देने का अवसर प्रदान किया ;

- (vi) प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की एक प्रति एग्रेलिक फाईबर के ज्ञात आयातकों (जिनका विवरण वादी द्वारा उपलब्ध कराया गया था) को भेजी और उनसे पत्र की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचार लिखित रूप में देने के लिए कहा ;
- (vii) आबकारी एवं सीमाशुल्क केन्द्रीय बोर्ड (सीबीईसी) से एग्रेलिक फाईबर के आयातकों का विवरण देने का अनुरोध किया गया था ;
- (viii) प्राधिकारी ने पूर्वोक्त नियम 6(3) के अनुसार विषयगत देशों के निर्यातकों एवं दूतावासों को याचिका की प्रति भेजी ;
- (ix) प्राधिकारी ने नियम 6(4) के अनुसार संबंधित सूचना प्राप्त करने के लिए विषयगत देशों के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी :—

#### टर्की

एके-पीए टेकस्टिल ईहराकट पजरलामा ए.एस.  
मीराले सैफिक बेसोक, एके-इलान नं. 15-17  
काट-1-2  
80090 गुमुस्सदया  
तक्सतिल ईस्तमबुल

#### हंगरी

जौलटेक  
जौलटेक आर टी नाईरगेसूजफालू

#### जर्मनी

बेयर कोसर जीएमबीएच  
डोरमागन  
एकोरडिस फाईबर  
कैलहैम  
मार्किश्च फासर  
प्रेमनिट्ज

#### ब्रिटेन

अर्काडीस फाईबर,  
कोटैलौट्स,  
ग्रीम्स बी  
मौन्टेफाईबर (यूके) लि.  
कोलेराइन

#### फ्रांस

पोटैलौट्स फाईबर,  
कैलाइज

निम्नलिखित निर्यातकों से उत्तर प्राप्त हुए थे :—

- 0 एके-पीए टेक्सटिल, टर्की जिन्होंने प्राधिकारी द्वारा भेजी गयी प्रश्नावली का उत्तर दिया।  
0 मार्किश्च फासर ऐजी  
0 एकाडिस यू के लिमिटेड

- (X) विषयगत देशों के दूतावासों को जांच आरंभ होने की सूचना नियम 6(2) के अनुसार दे दी गयी थी और उनसे, अपने देश के निर्यातकों उत्पादकों से, निर्धारित समय में प्रश्नावली का उत्तर देने के लिए कहने का अनुरोध किया गया था। ज्ञात, निर्यातकों/उत्पादकों की एक सूची के साथ उन्हें, निर्यातकों को भेजे गए पत्र, याचिका तथा प्रश्नावली की प्रति भी भेजी गयी थी।

- (xi) नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना प्राप्त करने के लिए भारत में एंक्रैलिक फाईबर के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों को प्रश्नावली भेजी गयी थी :—

वर्धमान स्पिनिंग एण्ड जर्नल मिल्स  
लुधियाना  
नाहर स्पिनिंग मिल्स लि.;  
लुधियाना  
मालवा काटन स्पिनिंग मिल्स लि.;  
लुधियाना  
राजस्थान स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि.  
नई दिल्ली  
विनसम टेक्सटाईल इण्डस्ट्रीज लि.  
घण्डीगढ़  
सिद्धार्थ सुपर सिनिंग मिल्स लि.  
नई दिल्ली  
भिवानी टेक्सटाईल्स मिल्स,  
हरियाणा  
आदिनाथ टेक्सटाईल्स लि.  
लुधियाना  
श्रुति सिंथेटिक्स लि.  
उदयपुर

निम्नलिखित से उत्तर प्राप्त हुए थे :

- नाहर स्पिनिंग मिल्स  
श्रुति टेक्सटाईल्स
- (xii) निर्यातक पार्टियों में से दो ने उत्तर देने के लिए समय बढ़ाने का अनुरोध किया जो उचित कारण बताने पर प्राधिकारी द्वारा मान लिय गया था।
- (xiii) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए साक्ष्य के अगोपनीय पाठों को एक सार्वजनिक फाईल के रूप में हितबद्ध पार्टियों द्वारा निरीक्षण के लिए, खुला रखा।
- (xiv) सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों के आधार एवं वादी द्वारा दी गयी सूचना के आधार पर, भारत में विषयगत माल के उत्पादन की इस्तरत लागत तथा उसके बनाने तथा बेचने की लागत का हिसाब लगाने के लिए लागत जांच की गई थी।
- (xv) यूरोपियन संघ को इन जांचों के कार्यक्षेत्र से बाहर रखने का निर्णय किया गया था क्योंकि पर्याप्त समय नहीं बीता है जिसके लिए स्पेन, पुर्तगाल तथा इटली जैसे यूरोपियन संघ के सदस्य देशों से विषयगत माल के आयातों पर इस समय लगने वाले शुल्कों की समीक्षा की आवश्यकता हो।

वर्तमान जांच के कार्यक्षेत्र में यूरोपियन संघ को, एक एकल सीमाशुल्क संघ तथा पृथक आर्थिक पहचान के रूप में शामिल किया गया है। पाटनरोधी उपायों की कोई सिफारिश यदि कोई हुई का मतलब यह होगा कि समान वस्तु के संबंध में की जा रही जाँचों के प्रयोजन के लिए, एक ही क्षेत्र के दो क्षेत्रों को अलग-अलग माना जा रहा है यद्यपि दो मामलों की जाँच की अवधि अलग-अलग है। पिछले मामले में यूरोपियन संघ के सदस्य देश जैसे स्पेन, पुर्तगाल और इटली संबद्ध थे और वर्तमान जांच में यूरोपियन संघ का पूरा क्षेत्र आ जाता है। प्राधिकारी नोट करता है कि समान क्षेत्र से संबंधित जांच कार्य करने के लिए यह विभिन्न व्यवहार एवं शुल्कों के लिए सिफारिश और उनका लगाया जाना, यूरोपियन संघ द्वारा प्रस्तुत एकल आर्थिक पहचान की परिकल्पना के अनुरूप नहीं होगा। ऊपर दिए गए कारणों को देखते हुए प्राधिकारी ने यूरोपियन संघ के विरुद्ध अपनी जांच न करने का निश्चय किया है।

- (xvi) टर्की के उत्पादक/निर्यातक ने प्राधिकारी को एक मूल्य अंडरटेकिंग देने की इच्छा व्यक्त की है जिसकी अलग से जांच की जा रही है ;
- (xvii) \*\*\* यह चिन्ह इस अधिसूचना में एक हितबद्ध पार्टी द्वारा गोपनीय आधार पर दी गयी और प्राधिकारी द्वारा वैसे मानी गयी सूचना का द्योतक है।

(xviii) जांच 1 अप्रैल, 1998 से 31 दिसम्बर, 1998 तक की अवधि के लिए की गयी थी।

### ख. वादियों के विचार

2. वादी ने अपनी याचिका में निम्नलिखित प्रमुख मुद्दे उठाए हैं :—

(i) वादी ने कहा है कि भारत में निम्नलिखित कम्पनियों द्वारा एक्रेलिक फाइबर का उत्पादन किया जा रहा है :—

कम्पनी का नाम	उत्पादन (मी. टन)	
	1997-98	1998-99 (अप्रैल-दिस.)
(क) इण्डियन एक्रेलिक लि.	27,183	19271
(ख) पशुपति एक्रिलोन लि.	18,485	14794
(ग) कंसोलिडेटेड फाइबर एंड कैमिकल्स लिमिटेड	13,001	10583
(घ) जे. के. सिंथेटिक्स लि.	593	—
(ण) इण्डियन पेट्रोकेमिकल कार्पोरेशन	20,800	15680

वादी ने कहा है कि जे. के. सिंथेटिक्स लि. इस समय काम नहीं कर रहा है और इसके संयंत्र बंद हैं। एक पहले के मामले में प्राधिकारी द्वारा जे. के. सिंथेटिक्स लि. की स्थिति पर मांगे गए स्पष्टीकरण के उत्तर में, रसायन तथा पेट्रोसायन विभाग द्वारा स्पष्ट किया गया था कि इस कम्पनी की कोटा में कुल संस्थापित क्षमता 24000 मी. टन एक्रेलिक फाइबर की है। उनके द्वारा एक्रेलिक फाइबर के उत्पादन में, दोनों ही यूनिटों में तालाबंदी एवं कार्यचालन पूंजी की कमी के कारण 1997-98 में गिरावट आई और यह 503 मी. टन का रहा। ये दोनों ही यूनिटें इस समय काम नहीं कर रही हैं। वादियों ने कहा कि मैसर्स जे. के. सिंथेटिक्स का वर्तमान जांच अवधि के दौरान उत्पादन 'शून्य' रहा है।

कुल भारतीय उत्पादन में वादी कम्पनियों की हिस्सेदारी 74% की है। इसके अलावा एक्रेलिक फाइबर मैन्यूफैक्चर्स फोरम वादियों का समर्थन करते हैं। अतः वादीगण स्वदेशी उद्योग को ओर से वर्तमान याचिका दायर करने के आधार को मंजूर करते हैं।

- (ii) विश्वभर में एक्रेलिक फाइबर का उत्पादन बढ़ी क्षमताओं में अनेक देशों में किया जा रहा है जो इस उत्पाद के लिए विश्व की मांग से अधिक है। परिणामस्वरूप अनेक उत्पादकों को अधिशेष क्षमता की समस्या का सामना करना पड़ रहा है।
- (iii) यह कहा गया है कि वादी कम्पनियाँ आयतित एक्रिलोनाईट्राईल पर निर्भर हैं जो उत्पाद का प्रमुख कच्चा माल है। अतः ये अन्तर्राष्ट्रीय दादागिरी के अधीन है।
- (iv) यह दावा किया गया है कि स्वदेशी उद्योग के पास वर्तमान और भावी मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त क्षमता है। भावी ग्राहकों तथा देश के नये भागों में विचाराधीन उत्पाद के प्रति जागरूकता को बढ़ाने के लिए उनके द्वारा प्रयास किए गए हैं।
- (v) विषयगत देशों से आयातों में भारी वृद्धि हुई है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार टर्की से कुल आयात जो 1997-98 में 119,505 मी. टन थे, जाँच अवधि के 7 महीनों में बढ़कर 5395,390 मीट्रिक टन के हो गये।
- (vi) एक्रेलिक फाइबर, मूल्यों के मामले में अति संवेदनशील है। मूल्यों में जरा से भी अंतर का परिणाम बिक्रियों की हानि हो सकता है। स्वदेशी उद्योग को आयातों से तीव्र मूल्य कमी के कारण या तो अपने बिक्री मूल्य कम करने पड़े हैं या बाजार हिस्सेदारी खोनी पड़ी है।
- (vii) पाटित आयातों से वादियों को हानि का दावा निम्नलिखित कारकों पर आधारित है :—

(क) विषयगत देशों से वास्तविक आयातों में वृद्धि।

(ख) आयातों की बाजार हिस्सेदारी में वृद्धि।

(ग) यदि स्वदेशी उद्योग, पाटित आयातों से बचने के लिए बिक्री मूल्य नहीं घटाता तो स्वदेशी उद्योग की बिक्रियों में गिरावट आ जाती।

(घ) लाभों (मार्जिनों) पर भारी दबाव के कारण वादियों को संभव सीमा तक जनशक्ति को घटाना पड़ा है। यह कहा गया है कि 31-3-98 को यथास्थिति जनशक्ति 608 थी जबकि 31-12-98 को यह घटकर 593 कर्मचारियों की रह गयी।

(ङ) लगातार पाटनों से उत्पन्न घोर आर्थिक संकटों के कारण उद्योग अपने विस्तार में कठिनाई अनुभव कर रहा है जिसके परिणामस्वरूप हानियाँ हो रही हैं और बाजार की दशा भी खराब है।

- (च) एफ़ेलिक फाइबर के प्रयोग के नये क्षेत्रों की खोज के लिए अनुसंधान और विकास प्रयासों हेतु धन खर्च करने में वादीगण असमर्थ हैं।
- (छ) एफ़ेलिक फाइबर के स्वदेशी उद्योग में रु. 1000 करोड़ तक के निवेश हैं। विषयगत देशों से आयातों में बाजार ने काफी मूल्य अवसादन किया है और मूल्य उस सीमा तक नहीं बढ़े हैं जितना कि निवेशों को देखते हुए उन्हें बढ़ना चाहिए था।
- (ज) वर्ष 1997-98 में स्वदेशी उद्योग द्वारा अर्जित किया गया आंशिक लाभ, चालू वर्ष में गायब हो गया और चालू वर्ष के पहले 9 महीनों में रु. 19 करोड़ तक की हानियाँ हुई।

### ग. 3. निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों के विचार

#### I. आयातकों के विचार

1. मैसर्स श्रुति टेक्सटाईल्स ने जाँच अवधि के दौरान विषयगत देशों से विचाराधीन उत्पाद का आयात नहीं किया है।
2. मैसर्स नाहर स्पिनिंग मिल्स ने भी जाँच अवधि के दौरान विषयगत देशों से आयात नहीं किये। उन्होंने कहा है कि जाँच अवधि के मई, 1998 से जुलाई, 1998 के दौरान स्वदेशी उद्योग से विषयगत माल की उनकी खरीद, छूट/कमीशन/बट्टा देने के बाद रु. XXX के शुद्ध मूल्य के XXX किलोग्राम तक की रही है। उनके द्वारा स्वदेशी उद्योग से खरीदे गए एफ़ेलिक फाइबर की औसत दर रु. XXX /किलोग्राम थी।

#### II. निर्यातकों के विचार

##### एके-पीए टेक्सटिल, टर्की

1. एसीएन तथा एफ़ेलिक फाइबर वस्तुएँ हैं। उनके मूल्यों में विश्व उत्पादकों तथा उपभोक्ताओं की सप्लाई और मांग के अनुसार उतार-चढ़ाव आता रहता है।
2. सामान्य नियम के तौर पर एक बड़ा खरीददार दाम कम देता है। अक्सा, मिश्र में एसीएन का सबसे बड़ा खरीददार है। अतः अक्सा द्वारा की गयी खरीदेँ औसत से सस्ती हैं।
3. अक्सा अपनी 230,000 मी. टन की संयंत्र क्षमता के साथ विश्व का सबसे अधिक किरायायती फाइबर उत्पादक है। यह अपनी भाप तथा बिजली, अपनी जोड़ीदार कम्पनी से खरीदता है जो एक विद्युत संयंत्र है।
4. अक्सा की समुद्र के साथ स्थिति तथा इसकी अपनी बंदरगाह सुविधाओं के कारण इसे प्रतिस्पर्धात्मक लाभ हैं।
5. बाजार मूल्य, चाहे स्वदेशी हो या विदेशी, बाजार की मांग से निश्चित किया जाता है। चीन के बाद टर्की, विश्व का दूसरा सबसे बड़ा एफ़ेलिक बाजार है। टर्की, विश्व में न्यूनतम मूल्य वाले बाजारों में एक है। अतः प्राधिकारी का यह मानना कि स्पेन में विषयगत माल का सामान्य मूल्य, टर्की में एफ़ेलिक फाइबर के सामान्य मूल्य का अच्छा संकेतक है, गलत है।
6. वादी ने कहा है कि भारतीय स्वदेशी बाजार में मंदी है। तथापि, समस्त विश्व में उत्पादन आंकड़े नीचे रहे हैं। अतः एक खास आयात को दोष देना और विश्व स्तरीय संकट को अनदेखा करना गलत है।
7. याचिका में यह कथन "स्वदेशी उद्योग को या तो अपने बिक्री मूल्य घटाने या बाजार हिस्सेदारी खोने के लिए विवश होना पड़ा है" एक भारतोन्मुख कथन नहीं है। विश्व स्तरीय परिवर्तनों से असम्पृक्त रहना संभव नहीं है। विश्वमंदी के परिणामस्वरूप एफ़ेलिक फाइबर के मूल्य 1995 में अ.डा. 2.20/किलोग्राम से घटकर 80 सेंट/किलोग्राम तथा और भी नीचे आ गए।
8. उद्योग का नेता और एक विश्वस्तरीय विक्रेता होने के कारण प्रतिवादी की, जाँचाधीन वस्तुओं के अन्य उत्पादकों के साथ एक गैरकानूनी ढंग से प्रतिस्पर्धा करने का कोई आशय नहीं है। विश्व स्तर पर मंदी के दबाव के कारण टर्की स्थानीय बाजार में उन्हें भी इसी प्रकार कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

#### भारत में यूरोपीय कमीशन के डेलिगेशन द्वारा व्यक्त किए गए विचार

1. चूंकि नई जाँच समग्र यूरोपियन समुदाय पर लागू होती है, इसके परिणामस्वरूप लागू किए जाने वाले पाटन-रोधी शुल्क तर्कतः, इटली स्पेन और पुर्तगाल सहित यूरोपियन समुदाय के सदस्य देशों से एफ़ेलिक फाइबर के आयातों पर भी लागू होने चाहिए। ऐसे मामले में, इन तीन सदस्य देशों के मूल के एफ़ेलिक फाइबर पर नए शुल्क लगाया जाना, टैरिफों एवं व्यापार पर सामान्य करार 1994 (पाटन-रोधी करार) के आर्टिकल VI के कार्यान्वयन पर विश्व व्यापार संगठन के आर्टिकल-11.2 द्वारा निर्धारित पद्धति से तुलनीय, वास्तव में उन्हीं उत्पादों पर पहले से लगे पाटन-रोधी शुल्क की समीक्षा करना होगा।
2. तथापि, निलम्बित पाटन-रोधी शुल्कों की कोई भी समीक्षा पाटन-रोधी करार के आर्टिकल 11.2 के आधार पर और पूर्णतः उम्मेद लगाई शर्तों के अनुसार होनी चाहिए। अतः वर्तमान मामले में, समग्र रूप से समुदाय से एफ़ेलिक फाइबर के आयातों की जाँच, उक्त प्रावधान के मेल और पुष्टि के अनुसार होनी चाहिए।
3. अतः वर्तमान जाँच या तो स्पेन, इटली तथा पुर्तगाल पर लगाए गए शुल्क की वस्तुतः जाँच का काम करती है, जो विश्व व्यापार संगठन के पाटन-रोधी नियमों के एक अंश बनता है या इन देशों को जाँच में से अलग कर दिया जाता है तो इस स्थिति में वह जाँच यूरोपियन समुदाय को कवर नहीं करती है।
4. यूरोपियन कमीशन यह भी जानना चाहेगा कि भारत सरकार ने, समग्र रूप से यूरोपियन समुदाय से एफ़ेलिक फाइबर के आयातों की जाँच आरम्भ करने का निर्णय किया जबकि, पिछले वर्ष इसी प्रकार का अनुरोध किए जाने पर, इसने अपनी जाँच कुछ सदस्य देशों तक सीमित रखी थी।

### घ. उठाए गए मुद्दों की जाँच

4. याचिकाकर्ता, निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पार्टियों द्वारा किए गए पूर्वोक्त निवेदनों की, जहाँ तक वे नियमावली के अनुसार संगत हैं और इस मामले पर प्रभाव डालते हैं, जाँच करके विचार किया गया है और इन निष्कर्षों में उपयुक्त स्थानों पर कार्रवाई की गई है।

### ड. जाँचाधीन उत्पाद

5. वर्तमान जाँच में विचाराधीन उत्पाद, सिकुड़ने योग्य एवं न सिकुड़ने योग्य दोनों प्रकार का एक्रेलिक फाइबर है। एक्रेलिक फाइबर एक कृत्रिम पॉलीमर है जो पेट्रोलियम के उप-उत्पाद एक्रिलोनाइट्राइल (एमीएन) के भार के अनुसार कम-से कम 85% से बना होता है। शेष घटक सामान्य वस्तुएँ हैं जो रंजकता, अद्रता शोषण आदि को बढ़ाने के लिए जरूरी होती हैं। "एक्रेलिक फाइबर" शब्द में स्टेपल, टो एवं टॉप शामिल हैं। एक्रेलिक फाइबर की रेंज 1.5 डेनियर से 8.0 डेनियर तक बताई जाती है।

एक्रेलिक फाइबर टैरिफ वर्गीकरण एच.एस. कोड नं० 5501, 5503 के अंतर्गत सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अनुच्छेद 55 के अधीन वर्गीकृत है। तथापि, यह वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और वर्तमान जाँच के कार्य क्षेत्र पर किसी भी प्रकार से बाध्यकर नहीं है।

### च. सामान्य वस्तुएँ

6. एक्रेलिक फाइबर विभिन्न विनिर्देशों/श्रेणियों में उत्पादित किया एवं बेचा जाता है जो फाइबर के गुण बताता है और इसके परिणामस्वरूप विभिन्न अन्त्य प्रयोग हो सकते हैं। तथापि एक्रेलिक फाइबर की विभिन्न किस्मों के उत्पादन हेतु प्रक्रिया, उपकरण या तकनीक में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है। फाइबर की प्रत्येक श्रेणी (डेनियर) विभिन्न बाजार खण्डों की जरूरत को पूरा करती है तथा एक दूसरे के साथ स्थानापन्नीय है।

वादियों के पास अपने संयंत्रों में फाइबर के सभी प्रकारों के उत्पादन की क्षमता है और उनके पास वे दोनों तकनीकों भी हैं जो विश्वभर में प्रयोग की जाती हैं। स्वदेशी उद्योग, एक्रेलिक फाइबर का उत्पादन, विश्व के अग्रणी जैसे इटली (अमरीका) एक्सलोन (जापान) तथा स्नेआ (इटली) के सहयोग में कर रहा है। यह स्थापित करने के लिए कि स्वदेशी उद्योग द्वारा उत्पादित एक्रेलिक फाइबर, विपयगत देशों में निर्यातित फाइबर के समान वस्तु है, विशेषताओं जैसे तकनीकी विनिर्देशों, उत्पादन प्रक्रिया, संयंत्र तथा उपकरण, तकनीक, कार्य तथा प्रयोग, विपणन एवं उपभोक्ता समझ और टैरिफ वर्गीकरण पर विचार किया गया है।

एक्रेलिक फाइबर (स्टेपल, टो तथा टॉप्स) का उत्पादन और बिक्री 1.5, 2.0, 3.0 से 8.0 तक विभिन्न डेनियर्स में किया जाता है और इसमें सिकुड़ने योग्य तथा न सिकुड़ने योग्य किस्मों शामिल रहती हैं। एक्रेलिक फाइबर का उत्पादन या तो आर्द्र स्पन या शुष्क स्पन तकनीक से किया जाता है एवं उत्पादन की प्रक्रिया, मोटे तौर पर विश्व भर में समान ही है। एक्रिलोनाइट्राइल वह मूल कच्चा माल है जो एक्रेलिक फाइबर के उत्पादन में काम आता है।

एक्रेलिक फाइबर नरम तथा फूला हुआ, हल्का और गरम है और यह ऊन का, जो अधिक मंहगी है, एक सस्ता विकल्प है। यह वस्त्र बनाने के काम आता है और इसके घरेलू तथा औद्योगिक उपयोग भी हैं। यह अपनी नीजी रखरखाव लागत, श्रम के प्रति उच्च प्रतिरोधता, सरलतापूर्वक रंगे जाने की योग्यता, ऊंची चमक और धूप एवं रसायनों आदि के प्रति बेहतर प्रतिरोधता के कारण पसंद किया जाता है। तथापि, भारत में इसके प्रयोग, अनुसंधान एवं विकास सुविधाओं के कारण सीमित हैं।

इस बात में कोई विवाद नहीं है कि भारतीय उद्योग द्वारा विभिन्न डेनियर्स में उत्पादित एक्रेलिक फाइबर की विशेषताएँ, आयातित फाइबर से काफी मिलती-जुलती हैं और यह वाणिज्यिक तथा तकनीकी दोनों ही दृष्टियों से, विपयगत देश से आयातित एक्रेलिक फाइबर से स्थानापन्नीय है। नियम 2(घ) के अर्थों के भीतर स्वदेशी उद्योग द्वारा उत्पादित एक्रेलिक फाइबर को, टर्की तथा हंगरी से निर्यातित उत्पाद के समान वस्तु माना गया है।

### छ. स्वदेशी उद्योग

7. मैमर्स इण्डियन एक्रेलिक लि०, चण्डीगढ़, पशुपति ऐसीलोन लि० नई दिल्ली तथा कंसोलिडेटेड फाइबर एंड कैमिकल्स लि० कलकत्ता ने संयुक्त रूप से याचिका दी है। वादी द्वारा यह कहा गया है कि इण्डियन पेट्रो कैमिकल् कार्पोरेशन लि० बड़ौदा एक अन्य कम्पनी है जो एक्रेलिक फाइबर बना रही है तथा पाँचवीं कम्पनी, मैमर्स जे०के० सिंथेटिक्स लि० इस समय बंद है। यह भी कहा गया है कि इन पाँचों यूनिटों की सम्मिलित क्षमता 108000 मी०टन की है। वर्ष 1998-99 (अप्रैल-दिसम्बर) में एक्रेलिक फाइबर का कुल उत्पादन 60328 मी०टन का था। वादी कम्पनियों का उत्पादन 44648 मी० टन का था।

दि फॉरम ऑफ एक्रेलिक फाइबर मैनुफैक्चर्स, जिसमें सभी वादी कम्पनियाँ सदस्य हैं, ने याचिका का समर्थन किया है। इस प्रकार वादी स्वदेशी उत्पादन के 25 प्रतिशत से अधिक का उत्पादक है और इसलिए नियमों के अन्तर्गत, स्वदेशी उद्योग की ओर से याचिका दायर करने की अपेक्षित आधार को पूरा करता है।

### ज. पाटन

8. किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य, धारा 9ए (1) के अन्तर्गत निम्नलिखित अर्थ रखता है :—

व्यापार के सामान्य व्यवहार में समान वस्तुओं के लिए, धारा (6) के अन्तर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित तुलनात्मक मूल्य, जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपयोग के लिए आशयित हो; या

जहाँ निर्यातक देश या क्षेत्र के स्वदेशी बाजार में व्यापार के सामान्य व्यवहार में समान वस्तु की कोई बिक्री नहीं हो या विशेष बाजार दशा के कारण अथवा निर्यातक देश या क्षेत्र के स्वदेशी बाजार में बिक्रियों की कम मात्रा के कारण, ऐसी बिक्रियों की वजह से तुलना नहीं हो सकती हो तो सामान्य मूल्य या तो :—

निर्यातक देश या क्षेत्र से आयात किये जाने पर समान वस्तु का उपधारा (6) के अन्तर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य या उचित तीसरे देश का तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य; या

उपधारा (6) के अन्तर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित, प्रशासनिक बिक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि के साथ मूलता के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत होगा,

बशर्ते मूलता के देश के अलावा अन्य किसी देश से वस्तु के आयात के मामले में या जहां वस्तु निर्यात के देश से केवल गुजारी गयी हो या ऐसी वस्तु निर्यात के देश में उत्पादित नहीं होती हो या निर्यात के देश में उसका कोई तुलनात्मक मूल्य नहीं हो, तो इसके सामान्य मूल्य का निर्धारण मूलता के देश में इसके मूल्य के संदर्भ में किया जाएगा।

प्राधिकारी ने ऊपर दी गयी धारा के अनुसार, विषयगत देशों के निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी। तथापि, केवल टर्की के निर्यातक ने प्रश्नावली का उत्तर दिया।

अतः सामान्य मूल्य एवं निर्यात मूल्य के संबंध में विषयगत देशों के अन्य निर्यातकों के कोई दावे नहीं हैं। हंगरी के उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा सूचना नहीं दिए जाने को देखते हुए प्राधिकारी को, वादी द्वारा यथा उपलब्ध कराए गए के अनुसार सामान्य मूल्य और निर्यात मूल्य के संबंध में सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना पर निर्भर रहने के लिए बाध्य होना पड़ा है।

### निर्यातकों के दावे

देश : टर्की

ए. के.-एस. ए. टेकस्टिल

9. निर्यातक ने दावा किया है कि उन्होंने XXX कि०ग्रा०, XXX कि०ग्रा०, XXX कि०ग्रा० तथा XXX कि०ग्रा० के क्रमशः 100% एक्रेलिक रंजित टो, 100% एक्रेलिक रंजित स्टेपल फाइबर, 100% एक्रेलिक रॉ क्वाइट स्टेपल फाइबर तथा 100% एक्रेलिक रॉ क्वाइट टो का पोत-लदान किया है। यूनिट मूल्य की रेंज निम्नलिखित है :

100% एक्रेलिक रंजित टो	अ०डा० XXX — XXX
100% एक्रेलिक रंजित स्टेपल फाइबर	अ०डा० XXX
100% एक्रेलिक रॉ क्वाइट स्टेपल फाइबर	अ०डा० XXX — XXX
100% एक्रेलिक रॉ क्वाइट टो	अ०डा० XXX — XXX

उन्होंने जाँच अवधि के दौरान भारत के खरीदारों को किए गए अपने निर्यातों के दो बीजकों की पतियाँ प्रस्तुत की हैं। उन्होंने दिए गए सीआईएफ मूल्य, 100% एक्रेलिक स्टेपल फाइबर हेतु XXX अ०डा० तथा 100% एक्रेलिक रंजित टो के लिए XXX अ०डा० हैं।

जाँच अवधि के दौरान उक्त श्रेणियों में स्वदेशी बिक्रियों की अपनी कुल मात्रा का विवरण एवं उसके यूनिट की रेंज, उनके द्वारा दी गई है। उन्होंने कहा है कि जाँच अवधि के दौरान विशिष्ट श्रेणियों में उनकी स्वदेशी बिक्रियों की मात्रा तथा यूनिट मूल्यों की रेंज निम्नलिखित के अनुसार है:

100% एक्रेलिक रंजित टो XXX कि०ग्रा०	अ०डा० XXX
100% एक्रेलिक रंजित स्टेपल फाइबर XXX कि०ग्रा०	अ०डा० XXX
100% एक्रेलिक रॉ क्वाइट स्टेपल फाइबर XXX कि०ग्रा०	अ०डा० XXX
100% एक्रेलिक रॉ क्वाइट टो XXX कि०ग्रा०	अ०डा० XXX

कोई समायोजन नहीं माँगे गए हैं।

ज. निर्यातकों के उत्तर तथा उपलब्ध सूचना पर आधारित सामान्य मूल्य एवं निर्यात मूल्य की प्राधिकारी द्वारा जाँच

10. प्राधिकारी के पास उपलब्ध तथ्यों के आधार पर यह देखा गया है कि एक्रेलिक फाइबर के विभिन्न डेनियर्स लागतों या मूल्यों की दृष्टि से कोई विशेष अंतर नहीं दिखाते और उसी रेंज में हैं। इसके अलावा, विभिन्न किस्मों के बीच काफी स्थानापन्नीयता है। अतः प्राधिकारी ने इन जाँचों के लिए सभी फाइबरों (विचाराधीन उत्पाद के रूप में बताने गए) को एकत्र कर लिया है।

### (क) सामान्य मूल्य

निर्यातकों के उत्तर पर आधारित :

क. टर्की

एके-पीए टेकस्टिल, टर्की से प्राप्त उत्तर की जाँच से पता लगता है कि अनुलग्नक 3ए, बी तथा सी पर दी गयी सूचना, जो स्वदेशी बिक्रियों और निर्यातों, दोनों के ही लिए मूल्य ढाँचे और बिक्री प्रबंधों के बारे में हैं, नहीं दी गयी है। परिणामस्वरूप स्वदेशी तथा निर्यात बाजारों में बेचे गए समान माल हेतु लिए गए यूनिट मूल्यों के विवरण एवं फैक्ट्री-एतर स्तर से आगे प्रत्येक प्रभार की राशि के विवरण उपलब्ध नहीं हैं। स्वदेशी बिक्री मूल्यों को दिखाते हुए मूल्य सूची या स्वदेशी बीजक नहीं दिए गए हैं। अनुलग्नक 4ए के अनुसार लाइसेंसशुदा/संस्थापित क्षमता, उत्पादन तथा बिक्री

से संबंधित सूचना एवं अनुलग्नक 4बी, सी तथा डी के अनुसार उत्पादन की लागत/बनाने तथा बेचने की यूनिट लागत तथा स्वदेशी एवं निर्यात बाजारों में लाभ के संबंध में सूचना नहीं दी गयी है। उत्पादन की लागत पर कुछ सामान्य सूचना दी गयी है जो संबंधित आंकड़ों से पुष्ट नहीं है। भारत को निर्यातों से संबंधित सूचना से, छूट की राशि XXX/पता लगती है और समुद्री भाड़े और समुद्री बीमे का हिसाब क्रमशः XXX/ तथा XXX/ के औसत पर लगाया गया है।

निर्यातक द्वारा दिए गए उत्तर से यह देखा गया है कि जाँचाधीन उत्पाद की कि०ग्रा० में बिक्रियाँ और अ०डा० में उनका मूल्य निम्नलिखित के अनुसार थे :

श्रेणी	सामान्य मूल्य यूनिट ( कि०ग्रा )		मूल्य/कि०ग्रा० मूल्य ( डा० )
एक्रेलिक रंजित टो	XXX	XXX	XXX
एक्रेलिक रॉ व्हाइट टो	XXX	XXX	XXX
एक्रेलिक रंजित स्टेपल फाइबर	XXX	XXX	XXX
एक्रेलिक रॉ व्हाइट स्टेपल फाइबर	XXX	XXX	XXX

स्वदेशी बिक्री की कुल मात्रा XXX कि०ग्रा० है जिसका मूल्य अ०डा० XXX/ है। प्रति कि०ग्रा० औसत मूल्य अ०डा० XXX/कि०ग्रा० बनता है।

#### ख. हंगरी

हंगरी में सामान्य मूल्य, हंगरी के स्वदेशी बाजार में एक्रेलिक फाइबर के मूल्यों पर आधारित है जैसा कि हंगेरियाई उत्पादक, जोल्टैक द्वारा हंगरी में एक स्थानीय खरीदार को की गई बिक्री हेतु बनाए गए ता० XXX के बीजक से सिद्ध होता है। यह इस बात का संकेतक है कि स्वदेशी मूल्य, हंगेरियाई फोरिन्ट XXX/कि०ग्रा० है जो 1 अ०डा० = 208 एचयूएफ की विनिमय दर पर अ०डा० XXX/बनता है।

हंगरी के निर्यातक ने प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है।

#### ख. निर्यात मूल्य

##### क. टर्की

ए के-पीए. टर्की के निर्यातों की मात्रा ( कि.ग्रा. में ) और अमरीकी डालर में उनका मूल्य निम्नलिखित के अनुसार है :—

श्रेणी	सामान्य मूल्य		मूल्य/कि.ग्रा.
	यूनिट ( कि.ग्रा. )	मूल्य ( डा. )	
100% एक्रेलिक रंजित टो	XXX	XXX	XXX
100% एक्रेलिक रॉ व्हाइट टो	XXX	XXX	XXX
100% एक्रेलिक रंजित स्टेपल	XXX	XXX	XXX
फाइबर	XXX	XXX	XXX
100% एक्रेलिक रॉ व्हाइट	XXX	XXX	XXX
स्टेपल फाइबर			

जाँच अवधि के दौरान दिए गए आयातों का सीआईएफ मूल्य रु. XXX/है। औसत एफओबी मूल्य का निश्चयन XXX% समुद्री भाड़े, XXX समुद्री बीमे प्रभार तथा XXX% कमीशन राशि के रूप में लेकर किया गया है। इन सब के लिए समायोजनों के बाद XXX कि. ग्रा. के निर्यातों की कुल मात्रा का कुल एफओबी मूल्य रु. XXX/आता है तथा एफओबी निर्यात मूल्य अ.डा. XXX/कि.ग्रा. बनता है।

#### ख. हंगरी

बादी ने हंगरी से निर्यात मूल्य का निश्चयन, हंगरी के उत्पादक के ऑफर ता. XXX के आधार पर किया है। ऑफर के अनुसार निर्यात मूल्य अ.डा. XXX/कि.ग्रा. अर्थात् अ.डा. XXX/मी. टन या रु. 42.1=1 अ.डा. की विनिमय दर पर रु. XXX/कि.ग्रा. है। यह कहा गया है कि हंगरी ने भारत को एक्रेलिक फाइबर का कोई निर्यात नहीं किया है। तथापि, हंगरी के उत्पादक, पाटित मूल्यों पर एक्रेलिक फाइबर दे रहे हैं। पाटन-रोधी करार के आर्टिकल 2.4.1 ( फुटनोट 8 ) निम्नलिखित के अनुसार है :

“ सामान्यतः बिक्री की तारीख, करार खरीद आर्डर की पुष्टि या बीजक, जो भी वास्तविक बिक्री को बताता है, की तारीख होगी। ”



**ट. पाटन मार्जिन****क. टर्की**

10. सामान्य मूल्य अ.डा. XXX/कि.ग्रा. एवं एफओबी निर्यात मूल्य अ.डा. XXX/कि.ग्रा. मानते हुए, प्राधिकारी द्वारा निश्चित पाटन मार्जिन अ.डा. XXX/कि.ग्रा. आता है (जो निर्यात मूल्य का 13% है)।

**ख. हंगरी**

11. समुद्री भाड़े (1%) की प्रभार (0.29%) तथा पैकिंग लागत (0.5%) के लिए समायोजन के बाद सामान्य मूल्य अ.डा. XXX/कि.ग्रा. तथा एफओबी निर्यात मूल्य XXX/कि.ग्रा. मानते हुए पाटन मार्जिन अ.डा. XXX कि.ग्रा. आता है (जो निर्यात मूल्य का 64.3% है)।

**ठ. क्षति**

12. पूर्वोक्त नियम 11 अनुलग्नक II के अंतर्गत जब क्षति का निष्कर्ष निकाला जाता है तो ऐसे निष्कर्ष में घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति का निर्धारण भी शामिल होगा, ऐसा करते समय "सभी संबंधित तथ्यों को ध्यान में रखा जाएगा जिनमें पाटित आयातों की मात्रा, स्वदेशी बाजार में समान वस्तुओं के मूल्यों पर उनका प्रभाव तथा ऐसी वस्तुओं के स्वदेशी उत्पादों पर ऐसे आयातों का परिणामी प्रभाव शामिल होगा।" मूल्यों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते हुए, इस बात की जाँच करना आवश्यक समझा गया है कि क्या भारत में समान उत्पाद के मूल्य की तुलना में पाटित आयातों द्वारा मूल्यों में पर्याप्त कटौती की गयी है या ऐसे आयातों का प्रभाव पर्याप्त मात्रा में मूल्यों को अन्यथा कम करना या मूल्यों में होने वाली वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी बढ़ गए होते।

पूर्वोक्त नियम 11 के अनुलग्नक II (iii) के अनुसार जब एक से अधिक देशों से उत्पाद के आयात पाटनरोधी जाँच के अधीन होते हैं तो नाम निर्दिष्ट अधिकारी ऐसे आयातों के संव्ययित प्रभाव का आकलन तभी करेगा जबकि यह निश्चित है कि प्रत्येक देश से निर्यातों के संबंध में पाटन का मार्जिन, निर्यात मूल्य के प्रतिशत के तौर पर व्यक्त किये जाने पर 2 प्रतिशत से अधिक है तथा प्रत्येक देश से किये गए आयात की मात्रा, भारत में समान वस्तु के आयात का 3 प्रतिशत है या अहाँ अलग-अलग देशों के निर्यात 3 प्रतिशत से कम हैं, और संव्ययित आयात समान वस्तु के आयातों के 7 प्रतिशत से अधिक है और आयातों का प्रभाव, आयातित वस्तु एवं स्वदेशी वस्तुओं के बीच प्रतिस्पर्धा की दशाओं के प्रकाश में उचित है।

प्राधिकारी नोट करता है कि पाटन का मार्जिन तथा टर्की से आयातों की मात्रा, उपरोक्त निर्धारित सीमाओं से अधिक है।

भारत में स्वदेशी उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जाँच करने के लिए प्राधिकारी ने पूर्वोक्त नियमावली के अनुलग्नक II (iv) के अनुसार ऐसे और संकेतकों पर विचार किया है जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डाल सकते हैं, जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, लाभकारिता, शुद्ध बिक्री प्राप्ति और पाटन की संघनता और मार्जिन आदि।

**(क) आयातों की मात्रा**

वर्ष 1996-97, 1997-98 तथा 1998-99 के दौरान एक्रेलिक फाइबर के कुल आयात क्रमशः 21,114 मी. टन, 26,422 मी. टन एवं 45,837.310 मी. टन (अक्टूबर 98 तक के सरकारी आँकड़ों से प्राप्त) थे। इस प्रकार वृद्धि 96-97 पर 1997-98 में 25.13% तथा 97-98 पर 98-99 में 73.48% की वृद्धि। वर्ष 1996-97 पर 1997-98 में वृद्धि 117% की थी। इस प्रकार आयातों की मात्रा जाँच अवधि के दौरान काफी बढ़ गई है।

टर्की से आयातों की मात्रा 1996-97, 97-98 तथा 98-99 में क्रमशः 199.949 मी. टन, 119.505 मी. टन एवं 5395.390 मी. टन (अक्टूबर 98 तक उपलब्ध सरकारी आँकड़ों के अनुसार) थी। इस प्रकार 96-97 पर 97-98 में आयात 40.23% घटे एवं 97-98 पर 98-99 में 4414.7% बढ़े। इस प्रकार जाँच अवधि के दौरान टर्की से आयातों में भारी वृद्धि हुई है।

अन्य देशों से आयातों की मात्रा 96-97, 97-98 तथा 98-99 (अक्टूबर 98 तक उपलब्ध सरकारी आँकड़ों के अनुसार) क्रमशः 21114 मी. टन, 26422 मी. टन तथा 45837.310 मी. टन थी। कुल आयातों में टर्की की हिस्सेदारी 96-97, 97-98 तथा 98-99 में क्रमशः 0.9%, 0.45% तथा 11.77% थी।

यह देखा गया है कि हंगरी ने इन अनन्तिम निष्कर्षों को अन्तिम रूप दिए जाने के समय अप्रैल से दिसम्बर, 98 के दौरान भारत को एक्रेलिक फाइबर के वास्तविक पोत-लदान किए। डीजीसीआईएस आँकड़ों में इन आयातों का केवल मूल्य रु. 3,29,169/- दिखाया गया है। इन आयातों की मात्रा ज्ञात नहीं है। ये आयात, जाँच अवधि के दौरान एक्रेलिक फाइबर के आयातों के कुल मूल्य का केवल 0.02% बनते हैं।

आज की तारीख तक उपलब्ध आयात आँकड़ों के आधार पर प्राधिकारी निश्चित करता है कि हंगरी से आयातों की मात्रा इस समय न्यूनतम है। अतः प्राधिकारी ने, और आगे जाँच होने तक, हंगरी को इन जाँचों के कार्य क्षेत्र से बाहर रखने का निश्चय किया है।

**(ख) उत्पादन एवं क्षमता उपयोग**

यह देखा गया है कि बादी कम्पनियों (अर्थात् इण्डियन एक्रेलिक, पशुपति एक्रिलोन तथा कनसोलिडेटेड) की उत्पादन क्षमता, उत्पादन तथा क्षमता उपयोग निम्नलिखित के अनुसार थे :

वर्ष	क्षमता (मी. टन)	उत्पादन (मी. टन)	क्षमता उपयोग
1995-96	50.000	42309	84.62 %
1996-97	55,000	55808	101.47%
1997-98	55,000	58669	106.67%
1998-99 जाँच अवधि	42750	44648	104.44%

पशुपति का क्षमता उपयोग 95-96, 96-97 तथा 97-98 में क्रमशः 95%, 98% तथा 103% था। जाँच अवधि के दौरान यह 98.63% था। इण्डियन एक्सेलिकस का क्षमता उपयोग 95-96, 96-97 तथा 97-98 तथा जाँच अवधि के दौरान क्रमशः 93%, 107% तथा 109% तथा 113% था। यह देखा जाता है कि वादी कम्पनियों का क्षमता उपयोग ऊँचा रहा है। यह कहा गया है कि एक्सेलिक फाइबर के उत्पादन हेतु सतत प्रक्रिया तकनीक उपयोग की जाती है और वादियों के पास, संयंत्र के एक बॉर चालू जो जाने पर उत्पादन को अधिकतम करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है। उत्पादन को प्रतिबन्धित करने के परिणामस्वरूप माल एवं साधनों (यूटीलिटीज) की बर्बादी से उत्पादन की यूनिट लागत में वृद्धि होगी और उत्पादन के प्रति यूनिट प्रशासनिक बंधे-खर्च अधिक होंगे। फलस्वरूप कम्पनियों ने अधिकतम उत्पादन सुनिश्चित किया है। यद्यपि उच्चतर क्षमता उपयोग से वादियों को, उत्पादित फाइबर की प्रति यूनिट प्रशासनिक बंधे-खर्च में कमी करने में मदद मिली है, फिर भी इसका परिणाम स्टॉक का बढ़ना, वादियों द्वारा संकट कालीन बिक्री और हानियाँ हुई हैं। वर्ष 1995-96, 96-97 तथा 97-98 तथा जाँच अवधि के दौरान अन्तिम स्टॉक क्रमशः 367 मी. टन, 1785 मी. टन, 3402 मी. टन तथा 4150 मी. टन के थे।

#### (ग) बिक्रियाँ एवं बाजार हिस्सेदारी

यह देखा गया है कि 96-97, 97-98 तथा 98-99 में एक्सेलिक फाइबर की माँग क्रमशः 75511, 81047 तथा 88261 मी. टन की थी (डीजीसीआईएस आँकड़ों के अनुसार आयातों के आँकड़े केवल अक्टूबर 98 तक के उपलब्ध हैं)। कुल माँग में आयातों की हिस्सेदारी 96-97, 97-98 तथा 98-99 में क्रमशः 28%, 33% तथा 51% थी। इस प्रकार कुल माँग में आयातों की हिस्सेदारी बढ़ रही है जबकि भारतीय उद्योग की हिस्सेदारी कम हो रही है। एक्सेलिक फाइबर की बिक्री से वादियों को लाभ की हानि हुई है। वर्ष 96-97, 97-98, 98-99 तथा जाँच अवधि (अप्रैल 98-दिसम्बर 98) बिक्री मूल्य रूप प्रति कि. ग्रा. क्रमशः XXX. XXX तथा XXX थे।

#### (घ) अन्तिम स्टॉक

यह देखा गया है कि वादी का अन्तिम स्टॉक 96-97, 97-98 तथा 98-99 (जाँच अवधि) में क्रमशः 1785 मी. टन, 3402 मी. टन तथा 4150 मी. टन के थे। अन्तिम स्टॉक, 96-97 के ऊपर 97-98 में 90 और 97-98 के ऊपर 98-99 (जाँच अवधि) 15.8% बढ़े। यह देखा गया है कि 4150 मी. टन के अन्तिम स्टॉक में से 995 मी. टन, पशुपति एक्सेलिकस के पास, 2820 मी. टन इण्डियन एक्सेलिकस तथा 335 मी. टन कंसोलिडेटेड फाइबर्स के पास था। एक्सेलिक फाइबर के उत्पादन की प्रक्रिया में लघु समय चक्र लगता है जो विचित्र रूप से वादी कम्पनियों द्वारा नीत, औसत स्टॉक 25.92 दिनों का उत्पादन होता है।

#### (ङ) मूल्य अंडरकटिंग तथा मूल्य अवसादन

वादी कम्पनियों ने कहा है कि विषयगत देशों से आयात, स्वदेशी उत्पादकों द्वारा बेचे जा रहे फाइबर के मूल्यों की अंडरकटिंग कर रहे हैं। पाटित आयातों द्वारा उत्पन्न धमकी की देखते हुए, वादियों को छूट देने के लिए लगातार बाध्य होना पड़ा है। विषयगत देशों से पाटित आयातों ने भारतीय बाजार में फाइबर के मूल्यों को अवसादित कर दिया है तथा इससे वादियों को हानि हुई है। वर्ष 1996-97 में एक्सेलिक फाइबर के प्रति किलोग्राम की औसत प्राप्ति XXX प्रति किलोग्राम थी जो 97-98 में गिरकर रु. XXX प्रति किलो ग्राम तथा जाँच अवधि के दौरान रु. XXX प्रति किलोग्राम हो गयी। यह भी दिखाया गया है कि 95-96 और 96-97 के दौरान वादी कम्पनियों की हानियाँ क्रमशः रु. 39.62 करोड़ तथा 13.33 करोड़ की थी। वर्ष 1997-98 में वादी कम्पनियों ने रु. 4.6 करोड़ रु. का मामूली लाभ कमाया जबकि यह कहा गया है कि उद्योग को 97, 98 में रु. 100 करोड़ से अधिक का न्यूनतम लाभ कमाना चाहिए था। जाँच अवधि (अप्रैल 98-दिसम्बर 98) के दौरान वादी कम्पनियों को रु. 16.08 करोड़ की हानियाँ हुई। तथापि, यह देखा गया था कि विभिन्न उत्पादक, विभिन्न बिक्री मूल्य ले रहे हैं एवं विभिन्न कम्पनियों का लाभ/हानि भिन्न-भिन्न हैं। पशुपति एक्सेलिकस, कंसोलिडेटेड फाइबर्स तथा इण्डियन एक्सेलिकस द्वारा लिए गए बिक्री मूल्य क्रमशः रु. XXX प्रति किलो ग्राम, रु. XXX प्रति किलोग्राम तथा रु. XXX प्रति किलो ग्राम थे। इस मूल्य स्तर पर पशुपति एक्सेलिकस ने रु. 3.59 करोड़, कंसोलिडेटेड फाइबर्स ने रु. 8.68 करोड़ तथा इण्डियन एक्सेलिकस ने रु. 3.81 करोड़ की हानि जाँच अवधि के दौरान उठाई।

#### (च) क्षमता का विस्तार

यह कहा गया है कि इण्डियन एक्सेलिकस ने अपने संयंत्र को इस प्रकार डिजाइन किया है कि उसकी क्षमता 12000 मी. टन से, चरणों में बढ़ाकर 35000 मी. टन कर दी जाए। तथापि, वित्तीय कमियों तथा बाजार की मंदी के कारण कम्पनी विस्तार करने में कठिनाई अनुभव कर रही है।

## ( छ ) निधियाँ जुटाने में असमर्थता

वादी कम्पनियाँ, वित्तीय संस्थाओं में लिए गए ऋणों एवं उन पर ब्याज को वापिस करने में कठिनाई अनुभव कर रही हैं। इसके कारण कम्पनियाँ, वित्तीय संस्थाओं से और आगे ऋण नहीं ले पा रही हैं और परिणामस्वरूप विस्तार की उनकी भावी योजनाओं पर इसका प्रभाव पड़ रहा है।

## ( ज ) अनुसंधान तथा विकास कार्यों के लिए निधियाँ जुटाने में असमर्थता

विश्व भर में एंक्रेलिक फाईबर के अनेक प्रयोग हैं जिसमें हौजरी की बस्तुएँ, घरेलू फर्नीशिंग ( कालीन बाजार ) तथा औद्योगिक प्रयोग भी शामिल हैं। फाईबर का उपयोग कुछ विशिष्ट क्षेत्रों जैसे अपहौलस्ट्री के लिए भी किया जाता है। तथापि, इन क्षेत्रों में फाईबर के उपयोग के लिए गहन अनुसंधान और विकास प्रयासों में निवेश की आवश्यकता है जो भारतीय उद्योग के लिए ऐसी अवस्था में मुश्किल है जिसमें लगातार पाटन के कारण उनका जीवन ही संकट में हो। यह कहा गया है कि जय हानियाँ होती हैं, अनुसंधान तथा विकास कार्यों के लिए निधियाँ उपलब्ध कराने की गुंजाइश नहीं होती। क्योंकि मुख्यतः कौशिश, वित्तीय संस्थाओं द्वारा लिए गए मूलधन और ब्याज को वापिस करने की तथा संयंत्र को चलाने के खर्चों की होती है।

## ( ड ) क्षति पर निष्कर्ष

14. पूर्वोक्त से यह देखा गया है कि :—

- ( क ) टर्कों से आयातों की मात्रा में वास्तविक रूप में वृद्धि हुई है ;
- ( ख ) वादी कम्पनियों की बाजार हिस्सेदारी में गिरावट आई है ;
- ( ग ) स्वदेशी उद्योग को उन मूल्यों पर बिक्री के लिए बाध्य होना पड़ा है जिनके परिणामस्वरूप हानियाँ हुई हैं या निवेशों पर कम आय हुई है ;
- ( घ ) आयात, स्वदेशी उद्योग के मूल्यों की अंडरकटिंग कर रहे हैं ;
- ( ङ ) स्वदेशी उद्योग का अंतिम स्टॉक बढ़ गया है ;

अतः प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि स्वदेशी उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है।

## ब. कारणात्मक संबंध

15. यह स्थापित करने के लिए कि विषयगत देशों से आयातों द्वारा स्वदेशी उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है, प्राधिकारी मानता है कि टर्कों से आयातों की बाजार हिस्सेदारी में वृद्धि के परिणामस्वरूप वादी की बाजार हिस्सेदारी में गिरावट आई है। ये निर्यात स्वदेशी उत्पाद के मूल्यों की अंडरकट करते हैं और स्वदेशी उद्योग को अपनी बिक्री अलाभकारी मूल्यों पर करने के लिए बाध्य करते हैं। परिणामस्वरूप स्वदेशी उद्योग को हानि हुई है। अतः स्वदेशी उद्योग को आर्थिक क्षति उक्त देश से पाटित आयातों के कारण हुई है।

## ब. भारतीय उद्योग के हित तथा अन्य मुद्दे

16. पाटनरोधी सीमाशुल्कों का प्रयोजन सामान्यतः उम पाटन को खत्म करना है जो स्वदेशी उद्योग को क्षति पहुंचा रहा है और भारतीय बाजार में एक मुक्त एवं उचित प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति को पुनः स्थापित करना है जो देश के सामान्य हित में है।
17. यह मानी हुई बात है कि पाटनरोधी सीमाशुल्कों का लगाया जाना, विषयगत माल का प्रयोग करते हुए बने उत्पादों के मूल्य स्तरों को प्रभावित कर सकता है और फलस्वरूप इस उत्पादों की संबंधित प्रतिस्पर्द्धिता पर कुछ प्रभाव डाल सकता है। तथापि, भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्द्धा पाटनरोधी उपायों से कम नहीं होगी, विशेष रूप से जबकि पाटनरोधी सीमाशुल्क की लेबी को उस राशि तक प्रतिबंधित रखा जाता है जहां तक स्वदेशी उद्योग को कोई क्षति की पूर्ति होती है। इसके विपरीत पाटनरोधी उपाय लगाने से, पाटनरोधी चलनों से प्राप्त होने वाले अनुचित लाभों को रोका जा सकेगा, इससे स्वदेशी उद्योग की गिरावट रुकेगी और एंक्रेलिक फाईबर के उपभोक्ताओं को अधिक किस्में उपलब्ध कराने में सहायता मिलेगी। पाटनरोधी उपायों को लगाना किसी भी प्रकार से विषयगत देशों से आयातों को नहीं रोकेगा और इसलिए उपभोक्ताओं को उत्पाद की उपलब्धता को प्रभावित नहीं करेगा।
18. स्वदेशी उद्योग की क्षति को समाप्त करने के लिए आवश्यक पाटनरोधी शुल्क का पता लगाने हेतु प्राधिकारी ने, स्वदेशी उद्योग के लिए क्षमता उपयोग के ईष्टतम स्तर पर उत्पादन की ईष्टतम लागत को लेते हुए, स्वदेशी उद्योग हेतु भारत में एंक्रेलिक फाईबर के उचित बिक्री मूल्य पर भरोसा किया है।

**ड. लैंडिङ मूल्य**

19. आयातों के लैंडिङ मूल्य का निश्चयन, सीमाशुल्क के वर्तमान स्तर एवं एक प्रतिशत लैंडिंग तथा दो प्रतिशत हैण्डलिंग प्रभारों को जोड़ने के पश्चात्, पाटन से संबंधित चरों में उपरोक्त विवरणित के अनुसार निश्चित, एंक्रेलिक फाईबर के निर्यात मूल्य के आधार पर किया गया है।

**त. निष्कर्ष**

20. उपरोक्त पर विचार करते हुए यह देखा गया है कि :—

(क) टर्की मूल के या वहां से निर्यातित और पैरा 5 में वर्णित एंक्रेलिक फाईबर का भारत को निर्यात, सामान्य मूल्य से नीचे पर हुआ है, जिसके कारण पाटन हुआ है;

(ख) भारतीय उद्योग को अर्थिक क्षति हुई है;

(ग) विपयगत देशों से आयातों के कारण क्षति हुई है।

21. और आगे जाँच होने तक विपयगत देश के मूल के या वहां से निर्यातित एंक्रेलिक फाईबर के सभी आयातों पर, अंतिम निश्चयन होने तक अंतिम तौर पर पाटनरोधी सीमाशुल्क लागाना आवश्यक समझा जाता है।

22. प्राधिकारी ने पाटन के मार्जिन के बराबर या कम पाटनरोधी शुल्क की राशि की सिफारिश करने पर विचार किया था, जो यदि लगाया जाता है, तो यह स्वदेशी उद्योग की हानि को समाप्त कर देगा। आयातों के लैंडिंग मूल्य की तुलना, जाँच अवधि के लिए निश्चित स्वदेशी उद्योग के उचित बिक्री मूल्य से भी की गयी थी। तदनुसार प्रस्तावित है कि अंतिम निश्चयन तक, सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के सीमाशुल्क उपशीर्ष 5501.30 तथा 5503.30 के अन्तर्गत आने वाले, टर्की मूल के या वहां से निर्यातित सभी एंक्रेलिक फाईबर पर, इस संबंध में केन्द्रीय सरकार द्वारा जारी किये जाने वाली अधिसूचना की तारीख से पाटनरोधी शुल्क लगा दिया जाए। पाटनरोधी शुल्क, स्तम्भ 3 में दी गयी राशि एवं आयातों के प्रति किलोग्राम लैंडिङ मूल्य के बीच का अंतर होगा।

देश	उत्पादक/निर्यातक का नाम	राशि
1	2	3 (रु.)
टर्की	एके-पीए टैक्सटिल ईहराकट पजरलामा ए. एस. तकसिम, इस्तान बुल स्वअन्य उत्पादक/ निर्यातक	71

23. प्रयोजन के लिए आयातों का लैंडिङ मूल्य, सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3ए, 8बी, 9 तथा 9ए के अन्तर्गत लगाए गए सीमा शुल्कों के सिवाए सभी शुल्कों सहित एवं सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 के अन्तर्गत सीमाशुल्क द्वारा यथानिर्धारित, समाकलन योग्य मूल्य होगा।

**भावी पद्धति**

24. प्रारंभिक निष्कर्षों को अधिसूचित करने के पश्चात् निम्नलिखित पद्धति अपनाई जाएगी :—

प्राधिकारी इन निष्कर्षों पर सभी हितबद्ध पार्टियों से राय मांगेगा और अंतिम निष्कर्षों में उन पर विचार किया जाएगा।

निर्यातकों, आयातकों, वादियों और अन्य ज्ञात हितबद्ध पार्टियों को प्राधिकारी द्वारा अलग से लिखा जा रहा है जो इस अधिसूचना के प्रेषण के 40 दिनों के भीतर अपने विचार बता सकते हैं। अन्य कोई हितबद्ध पार्टी भी, इन निष्कर्षों के प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचार दे सकती है।

प्राधिकारी सभी हितबद्ध पार्टियों को मौखिक अभिवेदन करने का अवसर प्रदान करेगा।

अंतिम निष्कर्षों को घोषित करने से पहले प्राधिकारी, आवश्यक तथ्यों को उद्घाटित करेगा।

## MINISTRY OF COMMERCE

## NOTIFICATION

New Delhi, the 13th October, 1999

**Subject:-** Anti-Dumping investigation concerning imports of Acrylic Fibre from Turkey, Hungary and EU--- Preliminary Findings.

34/1/98/DGAD.— Having regard to the Customs Tariff (Amendment) Act 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury), Rules, 1995, thereof:

**A. PROCEDURE**

1. The procedure given below has been followed with regard to the investigations:

i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received a written petition from M/s Indian Acrylics Ltd., Chandigarh, M/s Pasupati Acrylon Ltd., New-Delhi and M/s Consolidated Fibre and Chemicals Ltd., Calcutta, alleging dumping of Acrylic fibre originating in or exported from Turkey, Hungary and EU.

ii) The preliminary scrutiny of the application revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the petitioner. The petition was therefore considered as properly documented.

- iii) The Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the Petitioner decided to initiate investigations against alleged dumped imports of acrylic fibre originating in or exported from Turkey, Hungary and EU. The Authority notified the Embassies of the subject countries about the receipt of dumping allegation before proceeding to initiate investigations in accordance with sub rule 5(5) of the Rules;
- iv) The Authority issued a Public Notice dated 26<sup>th</sup> March, 1999, published in the Gazette of India Extraordinary initiating anti-dumping investigations concerning imports of Acrylic Fibre classified under Chapter-55 of the Customs Tariff Act, 1975, originating in or exported from Turkey, Hungary and EU.
- v) The Authority forwarded a copy of the Public Notice to the known exporters (whose details were made available by the Petitioner) and industry associations and gave them an opportunity to make their views known in writing within forty days from the date of the letter;
- vi) The Authority forwarded a copy of the Public Notice to the known importers ( whose details were made available by the petitioner) of acrylic fibre and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of the letter;
- vii) Request was made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) to arrange details of imports of acrylic fibre;

viii) The Authority provided copies of the Petition to the known exporters and the Embassies of the subject countries in accordance with Rule 6(3) supra;

ix) The Authority sent a questionnaire, to elicit relevant information to the following known exporters, from the subject countries, in accordance with Rule 6(4);

### **Turkey**

AK-PA Tekstil Ihracat Pazarlama A.S.  
Miralay Sefik Bey Sok, AK-ilan No. 15-17,  
Kat 1-2  
80090 Gumussdya,  
Taksim/Istanbul.

### **Hungary**

Zoltek.  
Zoltek Rt., Nyergesujfalu.

### **Germany**

Bayer Faser GmbH  
Dormagen.

Accordis Fibre,  
Kelheim.

Markische Faser,  
Premnitz

**U.K.**

Accordis Fibre,  
Courtaulds,  
Grimsby.

Montefibre (UK) Ltd.,  
Coleraine.

**France**

Courtaulds Fibre  
Calais.

Responses were received from the following exporters:

- AK-PA Tekstil, Turkey, who responded to the questionnaire forwarded by the Authority.
- Markische Faser AG
- Accordis UK Ltd. -

x) The Embassies of the subject countries were informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter, petition and questionnaire sent to the exporters was also sent to them, alongwith a list of known exporters/producers.

xi) A questionnaire was sent to the following known importers of acrylic fibre in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4);



**Vardhman Spg and Gen Mills**  
**Ludhiana**

**Nahar Spinning Mills Ltd.**  
**Ludhiana**

**Malwa Cotton Spinning Mills Ltd.**  
**Ludhiana**

**Rajasthan Spinning & Weaving Mills Ltd.**  
**New-Delhi**

**Winsome Textile Industries Ltd.**  
**Chandigarh**

**Siddhartha Super Spinning Mills Ltd.**  
**New-Delhi**

**Bhiwani Textile Mills**  
**Haryana**

**Adhinath Textiles Ltd.**  
**Ludhiana**

**Shruti Synthetics Ltd.**  
**Udaipur**

**Responses were received from the following:**

**Nahar Spinning Mills**

## Shruti Textiles.

xii) Two of the exporting parties requested for extension of time to submit the responses, which was, upon good cause shown, allowed by the Authority.

xiii) The Authority made available the non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.

xiv) Cost investigations were also conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the Petitioner.

xiv) It was decided to exclude the EU from the scope of these investigations as sufficient time had not elapsed that would warrant a review of the duties that are currently in force against imports of the subject goods from EU member countries such as Spain, Portugal and Italy.

The scope of the present investigations had included the EU as a single customs union and distinct economic entity. The recommendation (if any) of anti-dumping measures would imply that two regions/areas of the same territory have been treated differently for the purpose of investigations involving the same Like Article, although the period of investigations in the two cases vary. The previous case involved EU member-states such as Spain, Portugal and Italy and the present investigations cover the entire territory of the EU. The Authority notes that this varying treatment in the handling of investigations concerning a common territory and the recommendation and imposition of duties would not be in

keeping with the concept of a single economic entity that the EU represents. In view of the reasons cited above, the Authority decided not to proceed with its investigations against the EU.

xv) The producer/exporter from Turkey has informed the Designated Authority of their willingness to execute a price undertaking, which is being examined separately;

xvi) \*\*\* in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;

xvii) Investigations were carried out for the period starting from 1st April, 1998 to 31st December, 1998.

## **B. PETITIONERS VIEWS**

2. The Petitioner has raised the following major issues in their petition :-

(i) The Petitioner has stated that acrylic fibre is being produced in India by the following companies:

<b>Name of Company</b>	<b>Production (MT)</b>	
	<b>1997-98</b>	<b>1998-99(Apr-Dec)</b>
a) Indian Acrylics Ltd.	27,183	19271
b) Pasupati Acrylon Ltd.	18,485	14794
c) Consolidated Fibre and Chemicals Ltd.	13,001	10583

---

d) J.K.Synthetics Ltd.	593	---
e) Indian Petrochemical Corporation	20,800	15680

---

The Petitioner has stated that J.K Synthetics Ltd. is presently not in operation and its plants are closed. It was clarified by the Department of Chemicals and Petrochemicals in response to the Authority's request seeking clarification on the status of J.K.Synthetics Ltd, in an earlier case, that this company has a total installed capacity of 24000 MT of acrylic fibre at Kota and Jhalawar. The production of acrylic fibre by them came down to 593 Mt in 1997-98 on account of lock-out and working capital shortage at both the units, which are not in operation at present. The petitioners have stated that production by M/s J.K. Synthetics during the present period of investigation has been nil.

The petitioner companies account for 74% of the total Indian production. Further, the Forum of Acrylic Fibre Manufacturers supports the petitioners. The petitioners therefore satisfy the standing to file the present petition on behalf of the domestic industry.

(ii) Acrylic fibre is being produced in a number of countries throughout the world in large capacities, which exceed the global demand for the product. Many producers are consequently faced with surplus capacity.

(iii) It is stated that the Petitioner companies are dependent upon imported Acrylonitrile, which is the main raw material for the product. They are therefore subject to international vagaries.

(iv) Domestic industry, it is claimed, has enough capacity to satisfy current and future demand. Efforts have been made by them

to increase the level of awareness about the product under consideration amongst potential customers and in new areas of the country.

(v) The imports from the subject countries have increased tremendously. As per official statistics, total imports from Turkey which were at 119.505 Mt in 1997-98 increased to 5395.390 Mt in the first seven months of the period of investigation.

(vi) Acrylic fibre is highly price sensitive. Even a small difference in prices may result in loss of sales. The domestic industry has been forced in the face of severe price undercutting from imports, to either reduce their selling prices or lose market share.

(vii) The claim of injury to the Petitioners from the dumped imports is based on the following factors:

- a) Increase in actual imports from the subject countries.
- b) Increase in market share of imports.
- c) Sales of the domestic industry would have declined had the domestic industry not reduced the selling price to prevent dumped imports.
- d) Due to tremendous pressure on margins, the petitioners have been forced to reduce manpower to the extent possible. It is stated that as on 31/3/98 the manpower strength was 608 while as on 31/12/98 the strength was reduced to 593 employees.
- e) The industry is finding it difficult to expand in view of severe financial constraints arising out of sustained dumping resulting in losses and poor market conditions.
- f) The Petitioners are unable to fund research and development efforts directed towards finding new areas of use of acrylic fibre.
- g) Investments in the domestic acrylic fibre industry are to the extent of Rs. 1000 crores. The imports from the subject countries have caused significant price depression in the market and prices

have not increased to the extent they should have considering the investments made.

h) The marginal profit earned by the domestic industry in 1997-98 vanished in the current year and losses were to the extent of Rs 19 crores in the first nine months of the current year.

### **C. 3. VIEWS OF EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES**

#### **I Importers Views**

1. M/s Shruti Textiles has not imported the product under consideration from the subject countries during the period of investigation.

2. M/s Nahar Spinning Mills has also not imported from the subject countries during the period investigated. They have submitted that their purchases of the subject goods from the domestic industry during May '98 to July '98 of the period of investigation were to the extent of \*\*\*kg of a net value of Rs \*\*\*after rebate/commission/discount. The average rate of acrylic fibre purchased by them from the domestic industry was Rs \*\*\*/kg.

#### **II Exporters Views**

##### **AK-PA Tekstil, Turkey**

1. ACN and acrylic fibre are commodities. Their prices fluctuate in accordance with supply and demand of world producers and consumers.

2. As a general rule, a big purchaser pays less. Aksa is the world's biggest ACN buyer. Therefore purchases by Aksa are cheaper than the average.
3. Aksa is the most economical fibre producer in the world with a plant capacity of 230,000 MT. It purchases its steam and electricity from its sister company, which is a power plant.
4. Aksa's location by the sea and its own port facilities provide it with a competitive logistics advantage.
5. A market price, whether domestic or overseas, is determined by market demand. Turkey is the world's second biggest acrylic market next to China. Turkey is also one of the lowest priced markets in the world. Therefore the Authority's assumption that the normal value of the subject goods in Spain is a good indicator of the normal value of acrylic fibre in Turkey is incorrect.
6. The petitioner has stated that there is a slow down in the Indian domestic market. However, production figures all over the world has been low. It is therefore wrong to accuse a specific import and neglect the global crisis.
7. The statement made in the petition that "the domestic industry has been forced to either reduce their selling prices or lose the market" is not an India specific statement. It is impossible to disregard worldwide changes. Acrylic fibre prices are coming down from USD 2.20/kg in 1995 to 80 cents/kg and even further below as a result of a global slowdown.
8. Being the leader of the industry and a global seller, the respondent has no intention of competing with other producers of the articles under investigation in an illegal manner. They are also confronted with similar difficulties in the Turkish local market on

account of the pressures of the global slow-down.

### **Views Expressed by Delegation of the European Commission in India**

1. Since the new investigation applies to imports from the European Community as a whole, anti-dumping duties which may be imposed at its outcome should logically apply to acrylic fibre imports originating from all European Community Member-States including Italy, Spain and Portugal. In such case, the imposition of a new duty to acrylic fibre originating from these three Member States would de facto coincide with a review of the anti-dumping duty already applying to the same products, comparable to the procedure provided for by Article 11.2 of the WTO Agreement on the Implementation of Article VI of the General Agreement on Tariffs and Trade 1994 (Anti-Dumping Agreement).

2. However, any review of pending anti-dumping duties must be made exclusively on the basis of Art 11.2 of the Anti-Dumping Agreement, and in full accordance with the conditions imposed therein. In the present case, the investigation of imports of acrylic fibre from the Community as a whole should therefore be initiated expressly in combination, and in conformity with said provision.

3. Therefore either the present investigation acts as a de facto review of the duties imposed on Spain, Italy and Portugal, which would constitute an infringement of the WTO rules on anti-dumping or these countries are excluded from the investigation, in which case the investigation does not cover the EC as a whole.

4. The European Commission would also like to know on which basis the Indian Government decided to open an investigation into imports of acrylic fibre from the European Community as a whole, while, when confronted with a similar request last year, it limited



its investigation to certain Member States.

#### **D. EXAMINATION OF THE ISSUES RAISED**

4. The foregoing submissions made by the petitioner, exporters, importers and other interested parties, to the extent these are relevant as per Rules and to the extent these have a bearing upon the case, have been examined and considered and have been dealt with at appropriate places in these findings.

#### **E. PRODUCT UNDER INVESTIGATION**

5. The product under consideration in the present investigation is Acrylic Fibre in both shrinkable and non-shrinkable forms. Acrylic fibre is a synthetic polymer composed of at least 85 per cent by weight of acrylonitrile (ACN), a colourless liquid from petroleum bi-product. The balance components are comonomers, which are required to improve dyeability, moisture absorption etc. The term acrylic fibre includes Staple, Tow and Top. The range of acrylic fibre is stated to extend from 1.5 Denier to 8.0 Denier.

Acrylic fibre is classified under Chapter 55 of the Customs Tariff Act, 1975, under tariff classification H.S. Code No. 5501, 5503. The classification is however indicative only and in no way binding on the scope of the present investigations.

#### **F. LIKE ARTICLES**

6. Acrylic Fibre is produced and sold in various specifications/grades, which depict the properties of the fibre and may result in varying end uses. There is however no significant difference in terms of process, equipment or technology for the production of different varieties of acrylic fibre. Each range of fibre (denier) caters broadly to different market segments and is substitutable with one another.

The petitioners have the capacity to produce all types of fibre in their plants and possess both the technologies that are in use worldover. The domestic industry is producing acrylic fibre under collaboration with world leaders such as Dupont (USA), Exlan (Japan) and Snea (Italy). In order to establish that the acrylic fibre produced by the domestic industry is a like article to the fibre exported from the subject countries, characteristics such as technical specifications, manufacturing process, plant and equipment, technology, functions and uses, marketing and customer perception and tariff classification have been considered.

Acrylic fibre (staple, tow and tops) is produced and sold in different deniers ranging from 1.5, 2.0, 3.0 to 8.0 and consist of both shrinkable and non-shrinkable forms. Acrylic fibre is produced either through wet spun or dry spun technology and the process of manufacture is broadly similar throughout the world. Acrylonitrile is the basic raw material that goes into the production of acrylic fibre.

Acrylic fibre is soft and flurry, light weight and warm and is an economical substitute of wool which is more expensive. It is used in making apparel and has household and industrial applications too. It is preferred in view of its low maintenance cost, high resistance to abrasion, easy dye ability, high lustre and better resistance to sunlight and chemicals etc. In India however, the uses are limited due to lack of R&D facilities.

There is no argument disputing that acrylic fibre produced by the domestic industry in various deniers has characteristics closely resembling the imported fibre and is substitutable by the acrylic fibre imported from the subject country both commercially and technically. Acrylic fibre produced by the domestic industry has been treated as like article to the product exported from Turkey and Hungary, within the meaning of Rule 2(d).

## **G. DOMESTIC INDUSTRY**

7. M/s Indian Acrylics Ltd., Chandigarh, Pasupati Acylon Ltd., New-Delhi and Consolidated Fibre and Chemicals Ltd., Calcutta have jointly filed the petition. It is stated by the petitioner that Indian Petrochemical Corporation Ltd., at Vadodara is the other company producing acrylic fibre and the fifth company M/s J.K.Synthetics Ltd., is presently closed. It is also stated that these five units have a combined capacity of 108,000 MT. The total production of acrylic fibre in 1998-1999 (April-December) was 60,328 MT. The production of the petitioner companies was 44648 MT.

The Forum of Acrylic Fibre Manufacturers wherein all the petitioner companies are members has supported the petition. Thus the petitioner accounts for more than 25% of domestic production and therefore has the required standing to file the petition on behalf of domestic industry under the rules.

## **H. DUMPING**

8. Under Section 9A(1), normal value in relation to an article means:

The comparable price in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal

value shall be either:

comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

the cost of production of the said article in the country of origin alongwith reasonable addition for administrative, selling and general costs and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transshipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

The Authority sent questionnaires to the exporters from the subject countries in terms of the section cited above. However only the exporter from Turkey responded to the questionnaire.

Therefore there are no claims by the exporters from the other subject countries with regard to normal value and export price. In view of the non-submission of information by producers/exporters from Hungary, the Authority has been constrained to rely upon best available information with regard to normal value and export price as provided by the petitioner.

## **I. CLAIMS OF THE EXPORTERS**

Country: Turkey

AK-PA Tekstil.

9. The exporter has claimed that they have shipped 100% Acrylic

Dyed Tow, 100% Acrylic Dyed Staple Fibre, 100% Acrylic Raw White Staple Fibre and 100% Acrylic Raw White Tow of \*\*\*kg, \*\*\*kg, \*\*\*kg and \*\*\*kg respectively. The range of unit prices is as follows:-

100% Acrylic Dyed Tow - USD\*\*\* – \*\*\*  
 100% Acrylic Dyed Staple Fibre - USD \*\*\*  
 100% Acrylic Raw White Staple Fibre – USD\*\*\* – \*\*\*  
 100% Acrylic Raw White Tow – USD\*\*\* – \*\*\*

They have submitted copies of two invoices of exports made by them to buyers in India during the period investigated. The cif prices indicated therein is \*\*\*USD for 100% Acrylic Staple Fibre and \*\*\*USD for 100% Acrylic Dyed Tow.

Details of their total quantum of domestic sales in the above grades during the period investigated and the range of unit prices thereof have been submitted by them. They have stated that their quantum of domestic sales in the specified grades during the period of investigation and the range of unit prices were as follows:-

100%Acrylic Dyed Tow -***Kg	USD ***
100%Acrylic Dyed Staple Fibre– ***Kg	USD ***
100%AcrylicRaw White Staple Fibre –***Kg	USD ***
100%AcrylicRawWhite Tow –***Kg	USD ***

No adjustments have been claimed.

## **J. EXAMINATION OF NORMAL VALUE AND EXPORT PRICE BY THE AUTHORITY BASED ON EXPORTERS**

## **RESPONSE AND AVAILABLE INFORMATION.**

10. On the basis of the facts available with the Authority, it is observed that the various deniers of Acrylic Fibre do not display any significant difference in terms of the costs or prices and are in the same range. Moreover, there is a considerable amount of substitutability among the different varieties. The Authority has therefore, grouped all fibres (described as product under consideration) for these investigations.

### **(A) NORMAL VALUE**

#### **Based on exporters response:-**

##### **A. Turkey**

The examination of the response by AK-PA Tekstil, Turkey shows that information against Appendices 3A, B and C, which concerns price structures and sales arrangements for both domestic sales and for exports has not been filed. Consequently, details on unit prices charged for like goods sold on domestic and export markets indicating the details of the nature and amount of each charge beyond ex-factory level are not available. Copies of price lists or domestic invoices showing domestic sales prices have not been submitted. Information on licensed/installed capacity, production and sales as per Appendix 4A and cost of production/unit cost to make and sell and profit in domestic and export markets as per Appendices 4 B,C and D has not been furnished. Some general information on cost of production, which is not supported by relevant data, has been provided. From the information relating to exports to India, the commission amount is seen to be \*\*\*% and ocean freight and ocean insurance have been worked out at an average of \*\*\*% and \*\*\*%, respectively.

From the response filed by the exporter it is seen that domestic

sales of the product under investigation in terms of KG and value thereof in terms of USD were as follows:-

<u>Grade</u>	<u>Normal Value</u>		<u>Price/kg</u>
	<u>Unit(kg)</u>	<u>Value(\$)</u>	
Acrylic Dyed Tow	***	***	***
Acrylic Raw White Tow	***	***	***
Acrylic Dyed Staple Fibre	***	***	***
Acrylic Raw White Staple Fibre	***	***	***

The total quantum of domestic sales amount to \*\*\*kg against a total value of USD \*\*\*/. The average price per kg works out to USD \*\*\*/kg.

**B. Hungary:-** Normal value in Hungary has been based on the prices of acrylic fibre in the domestic market in Hungary as evidenced by an invoice raised for sale by the Hungarian manufacturer Zoltek to a local buyer in Hungary dated \*\*\* indicating domestic prices at Hungarian Forint \*\*\*/kg which comes to USD \*\*\* at an exchange rate of 1USD=208HUF.

The exporter from Hungary has not replied to the questionnaire.

**(B) EXPORT PRICE****A. Turkey**

The quantum of exports (in KG) by AK-PA, Turkey and value thereof in USD was as follows:-

<u>Grade</u>	<u>Export Price</u>		<u>Cif Price/Kg</u>
	<u>Unit(kg)</u>	<u>Value(\$)</u>	
100%Acrylic Dyed Tow	***	***	***
100%Acrylic Raw White Tow	***	***	***
100%Acrylic Dyed Staple Fibre	***	***	***
100%Acrylic RawWhite Staple Fibre	***	***	***

The cif value of exports made during the period of investigation is Rs \*\*\*/. The average fob export price has been determined after taking \*\*\*% as ocean freight, \*\*\*% as ocean insurance charges and \*\*\*% as commission amount. After adjustments on these accounts the total fob value comes to Rs \*\*\*/- against total quantity of exports of \*\*\*kg and the average fob export price works out to USD \*\*\*/kg.

**B. Hungary**

The petitioner has determined the export price from Hungary based on an offer made by the manufacturer from Hungary dated\*\*\*. The export price as per offer is USD \*\*\*/kg i.e., USD



\*\*\*/MT or Rs \*\*\*/kg at an average exchange rate of Rs 42.1=1USD. It is stated that Hungary has not exported any quantity of acrylic fibre to India. However producers from Hungary are offering acrylic fibre at dumped prices. Article 2.4.1 of the Agreement on Anti-Dumping (footnote 8) states as follows:- "Normally, the date of sale would be the date of contract, purchase order, order confirmation, or invoice, whichever establishes material terms of sale".

## **K. DUMPING MARGIN**

### **A. Turkey**

11. Considering the normal value at USD \*\*\*/kg and the fob export price at USD \*\*\*/kg, the dumping margin determined by the Authority comes to USD \*\*\*/kg (which is 13% of export price).

### **B. Hungary**

12. Considering the normal value at USD \*\*\*/kg and the fob export price at \*\*\*/kg after adjustments on account of ocean freight (1%), insurance charges (0.29%) and packing costs (0.5%) the dumping margin comes to USD \*\*\*/kg (which is 64.3% of export price).

## **L. INJURY**

13. Under Rule 11 supra, Annexure-II, when a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, "taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such article..." In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a

significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase, which otherwise would have occurred, to a significant degree

Annexure II(III) under rule 11 supra further provides that in case where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti-dumping investigation, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports, only when it determines that the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two per cent expressed as a percentage of export price and the volume of the imports from each country is three per cent of the imports of the like article or where the export of the individual countries is less than three per cent, the imports cumulatively account for more than seven per cent of the imports of the like article, and cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic article

The Authority notes that the margin of dumping and quantum of imports from Turkey are more than the limits prescribed above.

For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such further indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, quantum of sales, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II(iv) of the rules supra

### **(a) Quantum of Imports**

The total imports of acrylic fibre were 21,114 Mt, 26,422 Mt and 45837.310 Mt during 96-97, 97-98 and 98-99 (as available from official statistics upto Oct'98). Thus the increase was 25.13% in 1997-98 over 96-97 and 73.48% in 98-99 over 97-98. The increase was 117% in 98-99 over 96-97. Thus the quantum of imports have gone up significantly during the period of investigation.

The quantum of imports from Turkey were 199.949 Mt, 119.505 Mt and 5395.390 Mt during 1996-97, 97-98 and 98-99 (as available in official statistics upto Oct'98) respectively. Thus imports declined by 40.23% in 97-98 over 96-97 and increased by 4414.7% in 98-99 over 97-98. The increase was 2598.38% in 98-99 over 96-97. Thus the quantum of imports from Turkey have gone up significantly during the period of investigation.

The quantum of imports from other countries was 21114 Mt, 26422 Mt, and 45837.310 Mt in 96-97, 97-98 and 98-99 (as available in official statistics upto Oct'98) respectively. The share of Turkey in total imports was 0.9%, 0.45% and 11.77% in 96-97, 97-98 and 98-99 respectively.

It is seen that Hungary has effected physical shipments of acrylic fibre to India at the time of finalisation of these provisional findings during April to December'98. DGCIS data has reflected only the value of these imports at Rs 3,29,169/. The quantity of these imports is not known. These imports constitute only 0.02% of total value of imports of acrylic fibre during the period of investigation.

On the basis of the import data as available till date, the Authority determines that the actual volume of imports from Hungary is minimis at present. The Authority has therefore decided to exclude

Hungary from the scope of these provisional findings pending further investigations.

### **(b) Production and Capacity Utilisation**

It is observed that the production capacity, production and capacity utilisation of the petitioner companies (viz., Indian Acrylic, Pasupati Acrylon and Consolidated) were as under:

Year	Capacity (MT)	Production (MT)	Capacity Utilisation
1995-96	50000	42309	84.62%
1996-97	55000	55808	101.47%
1997-98	55000	58669	106.67%
POI-98-99	42750	44648	104.44%

The capacity utilisation of Pasupati was 76%, 98% and 103% in 95-96, 96-97 and 97-98 respectively. During the POI it was 98.63%. The capacity utilisation of Indian Acrylics was 93%, 107% and 109% in 95-96, 96-97 and 97-98 and 103% in the POI. The capacity utilisation of Consolidated Fibres was 82.89%, 103% and 108% in 95-96, 96-97, 97-98 and 118% in the POI. It is seen that the capacity utilisation of the petitioner companies has been high. It is stated that the production of acrylic fibre involves continuous process technology and the petitioners have no option but to maximise production once the plant is started. Restricting production would result in increase in unit cost of production by way of material and utilities wastage and higher incidence of overhead costs per unit of production. Resultantly all the

companies have ensured maximum production. Although the higher capacity utilisation has helped the petitioners to reduce their incidence of overhead expenditure per unit of the fibre produced, it has resulted in increasing stock situation, distress selling by the petitioners and financial losses. Closing stocks amounted to 367 MT, 1785 MT, 3402 MT and 4150 MT during 95-96, 96-97, 97-98 and the POI.

### **(c) Sales and Market Share**

It is observed that demand of acrylic fibre was 75511, 81047 Mt and 88261 MT in 96-97, 97-98 and 98-99 respectively (import figures are available till October'98 only as per DGCIS data). The share of imports in total demand was 28%, 33% and 51.9% in 96-97, 97-98 and 98-99, respectively. The share of the petitioner companies was 72%, 70% and 48% respectively in 96-97, 97-98 and 98-99 respectively. Thus the share of imports are rising in total demand whereas the share of Indian industry has been declining. Sale of acrylic fibre has resulted in loss of profit to the petitioners. The selling prices in Rs per kg were \*\*\*, \*\*\* and \*\*\* respectively in 96-97, 97-98 and the POI (Apr'98-Dec'98).

### **(d) Closing stocks**

It is observed that the closing stocks of the petitioner were 1785 MT, 3402 Mt and 4150 Mt in 96-97, 97-98 and 98-99 (POI) respectively. Closing stocks went up by 90% in 97-98 over that of 96-97 and by 15.8% in 98-99 (POI) over that of 97-98. It is observed that out of 4150 MT of closing stock, 995 MT was held by Pasupati Acrylon, 2820 MT by Indian Acrylic and 335 MT by Consolidated Fibres. The process of manufacturing acrylic fibre involves a short cycle time, which is typically less than a week. The average stock carried by the petitioner companies amounts to 25.92 days production.

### **(e) Price undercutting and price depression**

The petitioner companies have stated that imports from the subject countries have been undercutting the prices of the fibre being sold by the domestic producers. The petitioners have been constantly forced to offer discounts in view of the threat posed by the dumped imports. The dumped imports from the subject countries have suppressed the prices of the fibre in the Indian market and caused losses to the petitioners. The average realisation per kg of acrylic fibre in 1996-97 was \*\*\* per kg, which dropped to Rs. \*\*\* per kg in 97-98 and to \*\*\* during the POI. It is also shown that the losses of the petitioner companies were Rs. 39.62 crores and 13.33 crores during 95-96 and 96-97. In 97-98, the petitioner companies earned a meagre profit of 4.06 crores whereas it is stated that industry should have made a minimum profit of above Rs 100 crores in 97-98. During the POI (April'98-Dec'98) the petitioner companies incurred losses of Rs 16.08 crores. However it is observed that different producers are charging different selling prices and profit/loss of the different companies vary. The selling prices charged were Rs. \*\*\* per kg, Rs.\*\*\* per kg and Rs \*\*\* per kg by Pasupati Acrylon, Consolidated Fibres and Indian Acrylics respectively. At this price level, Pasupati Acrylon incurred a loss of Rs.3.59 crores, Consolidated Fibres incurred a loss of Rs 8.68 crores and Indian Acrylics incurred a loss of Rs.3.81 crores during the period of investigation.

### **(f) Expansion of Capacity**

It is stated that Indian Acrylics designed their plant in such a way that the capacity of the same was to be increased from 12000 Mt to 35000 Mt in stages. The company is however finding it difficult to expand on account of financial constraints and poor market conditions.

**(g) Inability to raise funds**

The petitioner companies have found it difficult to repay the loans and the interest on the loans taken from financial institutions. This has prevented the companies from procuring further loans from the financial institutions and consequently affected their future plans for expansion.

**(h) Inability to fund research and development activity**

Worldwide, acrylic fibre has numerous applications, which include hosiery items, home furnishings (carpet market) and industrial usage too. The fibre can also be used for some speciality areas such as upholstery. However usage of the fibre in these areas requires investment in extensive R&D efforts which is difficult for the Indian industry in a situation where its survival is at stake on account of continuous dumping. It is stated that when losses are incurred, the scope for providing funds for R&D activities does not exist as effort is made predominantly to pay back the interest and the capital borrowed from the financial institutions and to provide expenses for running the plant.

**M.CONCLUSION ON INJURY**

14. In view of the foregoing it is observed that:-

- a) the quantum of imports from Turkey has increased in absolute terms;
- b) the market share of the petitioner companies has gone down;
- c) the domestic industry has been forced to sell at prices that have resulted in losses or low returns on investments;
- d) imports are undercutting the prices of the domestic industry;
- e) closing stock of the domestic industry has gone up;

The Authority therefore concludes that the domestic industry has suffered material injury.

## **N. CAUSAL LINK**

15. In establishing that the material injury to the domestic industry has been caused by the imports from the subject country, the Authority holds that the increase in market share of imports from Turkey resulted in decline in the market share of the petitioner. These imports undercut the prices of the domestic product forcing the domestic industry to sell at unremunerative prices. Resultantly, the domestic industry incurred losses. The material injury to the domestic industry was, therefore, caused by the dumped imports from the said country.

## **O. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES**

16. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to reestablish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.

17. It is recognised that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and



help maintain availability of wider choice to the consumers of acrylic fibre. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

18. To ascertain the extent of anti-dumping duty necessary to remove the injury to the domestic industry, the Authority relied upon reasonable selling price of Acrylic Fibre in India for the domestic industry, by considering the optimum cost of production at optimum level of capacity utilisation for the domestic industry.

#### **P. LANDED VALUE**

19. The landed value of imports is determined on the basis of export price of Acrylic Fibre, determined as detailed above in the para relating to dumping, after adding the prevailing level of customs duties and one per cent landing and two per cent handling charges.

#### **Q. CONCLUSIONS**

20. It is seen, after considering the foregoing, that:

(a) Acrylic Fibre described under Para 5 originating in or exported from Turkey has been exported to India below normal value, resulting in dumping;

(b) the Indian industry has suffered material injury;

(c) injury has been caused by imports from the subject country.

21. It is considered necessary to impose anti-dumping duty, provisionally, pending final determination, on all imports of

Acrylic Fibre originating in or exported from the subject country, pending investigations.

22. It was decided to recommend the amount of anti-dumping duty equal to the margin of dumping or less, which if levied, would remove the injury to the domestic industry. The landed price of imports was also compared with the fair selling price of the domestic industry, determined for the period of investigations. Accordingly, it is proposed that provisional anti-dumping duties be imposed, from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all Acrylic Fibre originating in or exported from Turkey falling under Customs sub-heading 5501.30 and 5503.30 of the Customs Tariff Act, pending final determination. The anti-dumping duty shall be the difference between the amount mentioned in Col.3 and the landed price of imports per kg.

<u>Country</u>	<u>Name of the Producer/ Exporter</u>	<u>Amount</u>
1.	2.	3.(Rs)
Turkey	AK-PA Tekstil Ihracat Pazarlama A.S. Taksim, Istanbul & all other Producers/exporters	71

23. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Section 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

## **R. FURTHER PROCEDURE**

notifying the preliminary findings:

The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings;

Exporters, importers, petitioner and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days of the despatch of this notification. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings.

The Authority would provide opportunity to all interested parties for oral submissions;

The Authority would disclose essential facts before announcing the final findings.

RATHI VINAY JHA, Designated Authority

